International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2016; Page No. 94-95

समस्या नाटककार के रूप में डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल

नीरजा सिंह

हिन्दी विभाग, राजस्थान वि.वि., जयपुर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने अपनी प्रतिभा के बल पर हिंदी रंगमंच को एक नई दिशा दी है। इलाहबाद विश्वविद्यालय से प्रारंभ हुई। इनकी साहित्य यात्रा जीवन के अंतिम दिनों तक अनवरत चलती रही। इन्होंने कहानी, उपन्यास, जीवनी, एकांकी, नाटक, आलोचना इत्यादि क्षेत्रों में साहित्य–सृजन किया, परंतु इनकी प्रसिद्धि का मूलाधार नाट्य साहित्य रहा है।

इनका व्यक्तित्व इनकी रचनाओं में समाहित है। इनका जीवन व जीवन दृष्टि रचनाओं में प्रतिबिम्बित होता है। डॉ. लाल के चिंतन में भारतीय संस्कृति व आधुनिकता का समन्वय है। उन्होंने अपने चिंतन को सृजन पर हावी नहीं होने दिया है। उन्होंने स्वीकार किया है कि – ''मैं तो बड़ा सतर्क रहा, मेरे ऊपर चिंतन हावी न हो जाए, क्योंकि मैं जो जीवन जी रहा हूं, मेरे जीवन के आगे हर चीज गौण है।'' शहरी परिवेश में अधिकांश समय व्यतीत करने के बाद भी वे अपने मूल ग्रामीण संस्कार व परिवेश को संजोए रहे। वे कहते हैं – ''यदि मेरे समक्ष कैरियर की समस्या न होती तो मैं कभी भी गांव नहीं छोड़ता। एक दबाव के अन्तर्गत अपना गांव छोड़कर इलाहबाद आया था। परंतु गांव छोड़ने का दर्द मुझे आज भी है।''

इसी से वे नगरीय जीवन की समस्यात्मक जीवन के साथ–साथ ग्रामीण समस्याओं के प्रति भी सचेत रहे हैं। उनका अनुभव था कि दैनिक जीवन की समस्याओं को समाज व सामाजिक जीवन से पृथक नहीं किया जा सकता है। डॉ. लाल सामाजिक विकृतियों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का चित्रण कर समाज को नवीन दिशा प्रदान करने के लिए सजग रहे। अपने सामाजिक सरोकारों को प्रकट करते हुए वे कहते है कि– ''मैं ऐसे नाटक लिखना चाहता हूं, जिनमें कोई बदसूरती बेनकाब कर दी गई हो। कोई घिनौना नासूर–घाव साफ दिख गया हो, स्वप्न में रोते हुए इंसान के आंसुओं को मूर्त कर दिया हो।''

उनका प्रथम पूर्ण नाटक 'अंधा कुआं' (1951) ग्रामीण जीवन के वस्तु विधान पर आधारित है, जो ग्रामीण जीवन की विसंगतियों से उपजी समस्याआं को उजागर करता है। यहां विपरीत पारिवारिक त्रासदी की पीड़ा 'सूका' व उसके पति भगौती के माध्यम से मुखर हुई है। सूका पति के अत्याचारों से त्रस्त होकर एक अंधे कुएं में अपनी जीवन–लीला समाप्त करने का प्रयत्न करती है, परंतु जीवित बच जाती है। तब उसकी प्रतिक्रिया कुछ इस तरह पाठकों के समक्ष आती है – ''अंधा कुआ वह नहीं है, जिसमें डूब मरने के लिए वह गई थी, अपितु अंधा कुआं यहीं है, जिसके संग वह ब्याही गई है, जिसमें एक बार गिरने के बाद फिर कभी नहीं उबर सकी।''[1] अहंकारी व निष्ठुर पति की आंखे तब खुलती है, जब सूका इन्दर के प्रहार का स्वयं सामना कर अपने प्राण देकर उसे जीवन दान देती है''। सूका के आत्मोत्सर्ग के बाद उसे बोध होता है – ''वह अंधा था नहीं, अंधा बन गया। अंधा वह नहीं जिसकी आंख न हो, अंधा वह है, जिसमें मनुष्योचित विवेक न हो।''

'गंगा माटी' में डॉ. लाल ने स्वातन्त्रयोत्तर ग्रामीण जीवन में व्याप्त शोषण, पाखण्ड, कुसंस्कार, छुआछूत, अंधविश्वास, धर्मभीरू, मनोवृत्ति जैसी बुराईयों से उत्पन्न समस्याओं का व्यापक चित्रण किया है। यहां संलाप शैली के माध्यम से ग्रामीण परिवेश की दयनीय स्थिति का सजीव बोध कराया है। जहां कर्ज के बदले नारी को बंधक बना कर रखना सामान्य सी घटना समझाी जाती है। सीता के बाप ने कभी चंदरा से तीन सौ रूपये कर्ज में लिये थे। तभी से वह कर्ज व ब्याज के बदले बंधक है। चंदरा उसे छोटी–छोटी बातों पर पीटता है। जब कुसुम उससे पूछती है कि वह सीता को दिन में कितनी बाद मारता है? तो वह सहजभाव से अपनी बहादुरी प्रदर्शित करते हुए कहता है– ''दो–चार बार तो हो ही जाता है।''[2] दूसरी तरफ शिक्षित–धर्मांध देवल जैसे प्रभावशाली व्यक्ति भी गंगा जैसी जागरूक नारी को बार–बार अपमानित और प्रताड़ित करते दिखाई पड़ते हैं।

पौराणिक पृष्ठभूमि पर आधारित 'एक सत्य हरिशचन्द्र' नाटक सदियों से धर्म, जात–पाँत, ऊँच–नीच की बलिवेदी पर शक्तिशाली लोगों द्वारा शोषित व प्रताड़ित जनों की समस्याओं का साक्षात्कार कराता है। यह नाटक ऐसे लोगों द्वारा खेला जाता है, जो राजा के अंधविश्वास पूर्ण धर्म और सत्ताधारी सवर्ण राजनीति के भय, हिंसा व आतंक को भोगते हैं।

'मादा कैक्टस' नगरीय जीवन से जुड़ी स्त्री–पुरूष की समस्याओं का बोध कराता है। इस प्रतिकात्मक नाटक में स्त्री–पुरूष संबंधों पर आधारित समस्याओं को नवीन दृष्टि से बताया है। अरविंद जैसे लोग जीवन जिए बिना ही अपना वैवाहिक जीवन समस्याग्रस्त कर देते हैं। अरविंद की ऐसी मनोवृत्ति के कारण सुजाता जैसी प्रबुद्ध व सुशील नारी का जीवन अभिशप्त हो जाता है। स्वयं अरविंद का अहंकार उसे क्षयरोगी बना देता है। उसकी धारणा है कि ''मादा कैक्टस के संपर्क में आने वाला नर जीवन–विहीन हो जाता है, सूख जाता है, मर जाता है।''[3] यह मनोग्रंथि दोनों का जीवन नरक बना डालती है। पुरूष व स्त्री के द्वन्द्व से उत्पन्न समस्याएं वैवाहिक जीवन को कितना भयानक बना देती है। यह मादा कैक्टस से सहज ही अनुभव किया जा सकता है।

मनौवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर आधारित 'दर्पन' भी नारी जीवन की समस्याओं की ओर इंगित करता है। कुंठाग्रस्त 'पूर्वी' जीवन के कठोर सत्य से पलायन कर खुशियां पाने की लालसा रखती है। छद्म जीवन जीने की कामना उसे समस्याग्रस्त कर देती है। वह कटु सत्य से पलायन करती है। अहंकार उसे वास्तविक स्थिति तक पहुंचने नहीं देता है। वह बौद्ध धर्म की रूढ़ परम्पराओं को त्यागकर जीवन को नवीन दिशा में मोड़ना चाहती है। परंतु उसकी यह कामना कुछ ही समय में बिखर जाती है। डॉ. लाल ने बताया है कि दोहरे व्यक्तित्व की जटिलताएं व्यक्ति को समस्याग्रस्त बना देती है। यहां प्रबोध प्राप्त होता है कि बंधन को जाने बिना मुक्ति संभव नहीं है। राग को जाने बिना निष्काम होना संभव नहीं। यह सम्यक् ज्ञान ही हमें ऐसी समस्याओं से मुक्ति दिला सकता है।

'रातरानी' में दाम्पत्य जीवन में पनपने वाले आंतरिक द्वन्द्व से उत्पन्न समस्याओं का चित्रण है। जयदेव जैसे लोगों का असहज जीवन आंतरिक प्रसन्नता से वंचित रह जाता है। कुंतल व जयदेव के व्यक्तित्व नदी के दो किनारों के समान है। कुन्तल प्रेम, त्याग, मानवता, संवेदना व परदुःखकातरता जैसे उदात्त गुणों की पुंज है तो उसका इंजीनियर पति स्वार्थी, अहंकारी, आवारा, अवसरवादी, बदचलन और जुआरी प्रवृत्ति का है। अपने स्वभाव के कारण वह वैभव सम्पन्न होने पर भी चिंता व तनाव में रहता है। उसका अहंकार ही उसका सबसे बड़ा अभिशाप बन जाता है। नारी की पीड़ा कुंतल के इस कथन में मुखर हो जाती है– ''..... मूल अपराधिनी तो मैं हूं, स्त्री का जन्म पाकर। यह हृदय पाकर। माता–पिता के द्वारा पत्नीत्व का आदर्श पाकर। इस शरीर पर यह चिकनी चमड़ी पाकर। काश, मैंने भी तुम्हारी तरह दुनिया देखी होती।''[4] नाटक दहेज, विवाह, प्रेम जैसे सामाजिक समस्याओं के कारण दैनिक जीवन में आने वाली विसंगतियों का बोध कराता है।

'कर्फ्यू' में सामाजिक संबंधों, वर्जनाओं व मर्यादाओं से ग्रस्त जीवन में उत्पन्न समस्याओं की त्रासदी साकार हुई है। जो लोग जीवन की स्वाभाविकता को भुलाकर आडंबर पूर्ण कृत्रिम बंधनों में जीते हैं, उन्हें अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यह नाटक अपने भीतर के कर्फ्यू को तोड़कर नया जीवन जीने के प्रयास की प्रतीकात्मक स्वीकृति प्रदान कर वासनात्मक समस्या का समाधान प्रदान करता है।

'अब्दुल्ला दीवाना' में मिथ के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक व न्याय व्यवस्था की त्रासद स्थिति से उत्पन्न समस्याएं व्यंजित है। एब्सर्ड शैली का यह नाटक संकेत देता है कि उच्च वर्ग लालच में नैतिकता का गला घोंटता रहता है। झूठ, फरेब, हत्या, आडंबर, व्यभिचार, जालसाजी जैसी विकृतियां अनेक समस्याएं उत्पन्न कर देती है। ये नई सभ्यता की पहचान सी बन गई है। डॉ. लाल ने बताया है कि जीवनमूल्यों का अन्वेषण किए बिना इन सामाजिक समस्याओं से मुक्ति संभव नहीं।

'व्यक्तिगत' में व्यक्तिवाद व स्वार्थलिप्सा के कारण उत्पन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। आधुनिक समाज कदाचरण, अनैतिकता, बेईमानी व कुटिल मनोवृत्ति से ग्रसित है। नाटक में पति–पत्नी के तनाव से उत्पन्न समस्याओं के लिए आधुनिक मूल्यहीन चिंतन को दोषी बताया गया है।

'मिस्टर अभिमन्यु' इस देश की आजादी के बाद आम आदमी द्वारा अनुभवन की गई समस्याओं का साक्षात्कार कराता है। नाटक का नायक राजन (अभिमन्यु) राजनेता, पूंजीपति द्वारा किए जा रहे हत्या, अन्याय, लूटमार जैसे कुकृत्यों का शिकार हो जाता है। प्रशासनिक ब्यूरोक्रेसी उसे उलझा देती है और वह षड्यन्त्र से बाहर निकलने के लिए छटपटाता रहता है। किन्तु बाहर नहीं निकल पाता। उसकी सारी आदर्शवादिता भ्रष्ट अवसरवादी, मर्यादाहीन व्यवस्था के सामने दम तोड़ देती है। नाटककार ने पौराणिक कथा को आधुनिकता का जामा पहनाकर स्मृत–दृश्यविधानों के माध्यम से व्यक्ति की द्विधाग्रस्त मानसिकता, अनिर्णय व राजनीतिक मूल्यहीनता से उत्पन्न समस्याओं का उभारा है।

'कलंकी' के माध्यम से डॉ. लाल ने मिथकीय प्रयोग किया है। इसके संप्रेषण में प्रतीक, धर्मकथा, जातक चित्र, बिंब आदि समाहित है। यह मनुष्यों के आतंरिक यथार्थ को आदिम ढ़ंग से उजागर करता है। यहां व्यंजित है कि व्यक्ति के ऊपर आधुनिक जीवन का दबाव अत्यधिक बढ़ गया है। इससे उसका यथार्थ से संबंध टूट सा गया है। इसी से वह अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है।

'यक्ष प्रश्न' में भी पौराणिक कथा व पात्रों को आधुनिक संदर्भ से जोड़कर विविध समस्याएं बताई गई है। यहां अप्रत्यक्ष रूप से राजनेता, उद्योगपति, अफसर आदि की बढ़ती हुई महत्वाकांक्षाओं के कारण उत्पन्न समस्याएं व्यंजित है। सत्यप्रिय का यह कथन समाज की कुटिल–स्वार्थ मानसिकता को नग्न सत्य को उजागर करता है – ''रूको! क्या तुम लोग जिंदा हो? बालू रेत की तरह बिखरे व फैले हुए। हवा में उड़ने वाले। सूराखों में गिरने वाले चंद टुकड़ो व स्वार्थों में बिकने वाले। जो जैसा चाहे वैसा तुम्हें इस्तेमाल कर ले..... ..... यहीं है तुम्हारे जीवित रहने का प्रमाण?''[5] इस तरह डॉ. लाल ने आधुनिक स्थितियों के माध्यम से विविध समस्याओं के ज्वलंत प्रश्न सामने रखे हैं, जिनके उत्तर देने में लोग असमर्थ हो गए हैं।

डॉ. लाल ने अपने नाटकों में मूल्यसंघर्ष, नारी उत्पीड़न, पारिवारिक असांमजस्य, अलगांव, महत्वाकांक्षाएं, संबंधों के अवमूल्यन, भौतिकतावादी सोच से संबंधित समस्याओं को विशेष स्थान दिया है। उनमें नारी की वेदना अधिक गहरी व पीड़ादायी दिखाई देती है। जटिल व रूढ़िवादी समाज की समस्याओं को व्यंजित करने के लिए अनेक स्थलों पर मिथकों का आश्रय लिया गया है। अंधाकुआं, रक्तकमल, गंगामाटी, एक सत्य हरिशचंद्र में ग्रामीण परिवेश से जुड़ी समस्याएं वर्णित है। मादा कैक्टस, रातरानी, कर्फ्यू, व्यक्तिगत, मिस्टर अभिमन्यु में नगरीय जीवन की समस्याएं है।

रंग चेतना से अनुप्राणित सजग साहित्यकार होने के कारण डॉ. लाल ने देशकाल व परिस्थिति से उत्पन्न समस्याओं के प्रति मौलिक विचार प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने नाटकों को मानवीय द्वन्द्व व समस्याओं से सीधे जोड़ा है। उनके पात्र हमारे आस–पास के जीवन में सांस लेते हैं व दैनिक समस्याओं से जूझते हैं। इस संबंध में गिरीश रस्तोगी कहती है कि – ''आधुनिक संवेदन, नयी आवश्यक विषयभूमि से मानवीय समस्याओं, मानवीय द्वन्द्व, सामाजिक चेतना से सीधे सम्पृक्त करना एक सजीव कला है। .... इस क्रम में डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल का नाम बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। ..... उन्होंने नाटक को उसके विधागत मौलिकता में पहचाना। ..... नाटककार का चिंतन मौलिक, सुव्यवस्थित और बहुत स्पष्ट है।'' इस तरह सामयिक चेतना के प्रति जागरूक रहने के कारण डॉ. लाल के नाटक अधिक ग्राह्य, पठनीय व स्मरणीय है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, अन्धा कुँआ, भारती भण्डार, प्रयाग, 1954, पृ.सं. 22
2. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, गंगा माटी, पीताम्बर पब्लिशिंग, कम्पनी, नई दिल्ली, 1987, पृ.सं. 29
3. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, मादा कैक्टस, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, 1959, पृ.सं. 20
4. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, रात रानी, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, सप्तम संस्करण 1986, पृ.सं. 46
5. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, यक्ष प्रश्न, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 1988, पृ.सं. 32